पोलियो प्रतिरक्षण अभियान

चर्चा में क्यों?

भारतीय विशेषज्ञ सलाहकार समूह (IEAG) ने 8 दिसंबर 2024 से प्रारंभ होने वाले पोलियो उप-राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस (SNID) के अंतर्गत हरियाणा के छह जिलों को शामिल करने का निर्णय लिया है। ये ज़िले **कैथल, झज्जर, गुरुग्राम, फरीदाबाद, सोनीपत और नूंह** हैं।

IEAG विशेषज्ञों का एक समूह है जो भारत सरकार को **पोलियो उन्मूलन पर सलाह देता है और रणनीतिक मार्गदर्शन प्रदान करता है।**

मुख्य बिंदु

- **पोलियो SNID राउंड:**
  - मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य (MCH) निदेशक ने आगामी **SNID दौर** की तैयारियों की समीक्षा के लिये राज्य टास्क फोर्स की बैठक की अध्यक्षता की।
  - उपस्थित लोगों में राज्य टीकाकरण अधिकारी, राज्य मुख्यालय के अधिकारी, ज़िला टीकाकरण अधिकारी तथा **महिला एवं बाल विकास, शिक्षा,** श्रम, शहरी स्थानीय निकाय, पंचायती राज, जनसंपर्क, आयुष, **चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान,** भारतीय चिकित्सा संघ तथा **भारतीय बाल चिकित्सा अकादमी जैसे प्रमुख हितधारक विभागों के प्रतिनिधि शामिल थे।**
- **पोलियो-मुक्त स्थिति और सतर्कता की आवश्यकता:**
  - इस बात पर प्रकाश डाला गया कि हरियाणा और भारत वर्ष 2011 से पोलियो मुक्त बने हुए हैं, जो लगातार प्रयासों के कारण एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।
  - **उन्होंने आगामी SNID दौर में 0-5 वर्ष की आयु के सभी पात्र बच्चों को शामिल करने** के महत्त्व पर बल दिया, विशेष रूप से मलावी और मोजाम्बिक में पोलियो वायरस के मामलों की रिपोर्ट के मद्देनज़र, जिनका संबंध पाकिस्तान से है।
- **उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना:**
  - अधिकारियों को निर्देश दिया गया कि वे उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में संवेदनशील संख्या की 100% कवरेज प्राप्त करने के लिये व्यापक नामांकन और सूक्ष्म नियोजन सुनिश्चित करना, जैसे:
    - शहरी मलिन बस्तियाँ
    - खानाबदोश स्थल
    - निर्माण स्थल
    - ईंट भट्टे
    - पोल्ट्री फार्म
    - कारखाने
    - गन्ना क्रशर
    - पत्थर-कुचलने वाले क्षेत्र
- **प्रशिक्षण और पर्यवेक्षण:**
  - **प्रभावी टीकाकरण** सुनिश्चित करने के लिये सभी टीका लगाने वालों को प्रशिक्षण दिया जाएगा।
  - राज्य मुख्यालय के अधिकारी ज़िला स्तर पर गतिविधियों की निगरानी एवं पर्यवेक्षण करेंगे।
    - वास्तविक समय पर फीडबैक प्राप्त करने तथा सभी ज़िलों में बहु-स्तरीय पर्यवेक्षण लागू करने के लिये ज़िला-स्तरीय पर्यवेक्षण योजना तैयार की जाएगी।

पोलियो

- **परिचय:**
  - पोलियो एक **अपंगकारी और संभावित रूप से घातक वायरल संक्रामक रोग है** जो तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है।
  - तीन अलग-अलग और प्रतिरक्षात्मक रूप से भिन्न जंगली पोलियोवायरस उपभेद हैं:
    - जंगली पोलियोवायरस प्रकार 1 (WPV1)
    - जंगली पोलियोवायरस प्रकार 2 (WPV2)
    - जंगली पोलियोवायरस प्रकार 3 (WPV3)

- लक्षणात्मक रूप से, तीनों स्ट्रेन एक जैसे हैं, यानी वे अपरिवर्तनीय पक्षाघात या यहाँ तक कि मौत का कारण बनते हैं। हालाँकि, आनुवंशिक और वायरोलॉजिकल अंतर हैं, जो इन तीनों स्ट्रेन को अलग-अलग वायरस बनाते हैं जिन्हें अलग-अलग खत्म किया जाना चाहिये।

- **प्रसार:**
  - यह वायरस **व्यक्ति-से-व्यक्ति में मुख्यतः मल-मौखिक मार्ग से फैलता है** या कभी-कभी एक ही माध्यम से संक्रमित होता है (उदाहरण के लिये, दूषित जल या भोजन के माध्यम से)।
  - यह **मुख्य रूप से 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को प्रभावित करता है।** वायरस आंत में बढ़ता है, जहाँ से यह तंत्रिका तंत्र पर आक्रमण कर सकता है और पक्षाघात का कारण बन सकता है।
- **लक्षण:**
  - पोलियो से पीड़ित ज़्यादातर लोग बीमार महसूस नहीं करते। कुछ लोगों में सिर्फ मामूली लक्षण होते हैं, जैसे बुखार, थकान, मतली, सिरदर्द, हाथ-पैरों में दर्द आदि।
  - दुर्लभ मामलों में, पोलियो संक्रमण के कारण मांसपेशियों की कार्यक्षमता स्थायी रूप से समाप्त हो जाती है (लकवा)।
  - यदि साँस लेने के लिये उपयोग की जाने वाली मांसपेशियाँ लकवाग्रस्त हो जाएँ या मस्तिष्क में संक्रमण हो जाए तो पोलियो घातक हो सकता है।
- **रोकथाम और उपचार:**
  - **इसका कोई उपचार नहीं है, लेकिन** टीकाकरण के माध्यम द्वारा इसे रोका जा सकता है।
- **टीकाकरण:**
  - ओरल पोलियो वैक्सीन **(OPV)** को संस्थागत प्रसव के लिये जन्म खुराक के रूप में मौखिक रूप से दिया जाता है, फिर 6, 10 और 14 सप्ताह में तीन प्राथमिक खुराक और 16-24 महीने की उम्र में एक बूस्टर खुराक दी जाती है।
  - सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम **(UIP)** के अंतर्गत **DPT (डिप्थीरिया, पर्टुसिस और टेटनस)** की तीसरी खुराक के साथ एक अतिरिक्त खुराक के रूप में **इंजेक्टेबल पोलियो वैक्सीन (IPV) की शुरुआत की गई है।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/polio-immunisation-drive